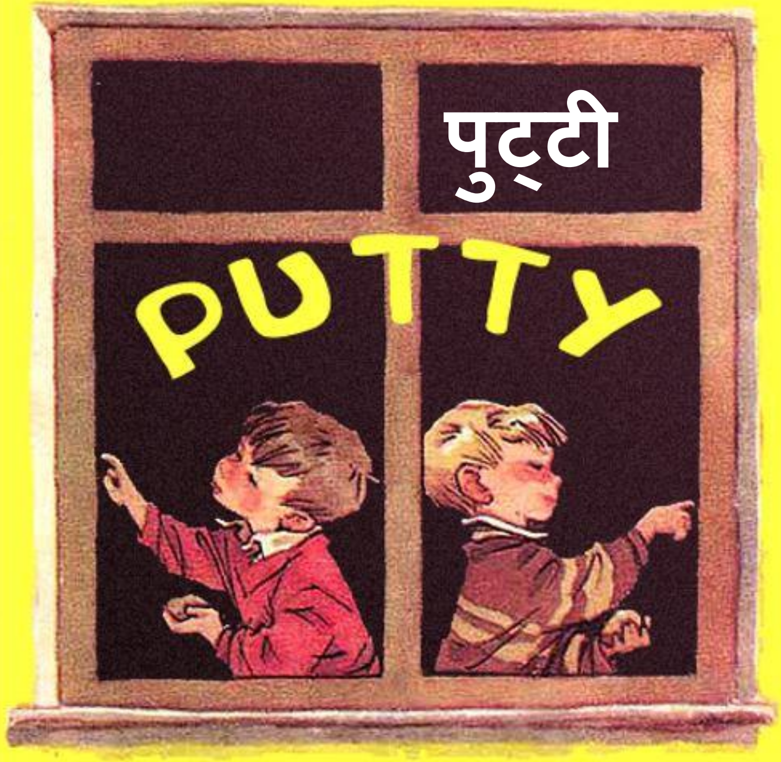
N.Nosov



निकोलाई नोसोव

चित्र: वाई. मिगुनोव

हिंदी: अरविन्द गुप्ता



कड़ाके की सर्दी से बचने के लिए खिड़की के फ्रेम पर पुट्टी लगाने के लिए एक दिन कांचवाला आया. कोस्त्या और शूरिक खड़े होकर उसे काम ख़त्म करते हुए देख रहे थे.

जब कांचवाला चला गया, तो उन्होंने खिड़कियों से नरम पुट्टी खरोंचकर निकाली और उससे जानवरों का मॉडल बनाना शुरू किए. परेशानी यह थी कि जानवरों के आकार ठीक से बने नहीं. फिर कोस्त्या ने एक सांप बनाया और शूरिक से कहा,

"देखो मैंने यह क्या बनाया है."

शूरिक ने करीब से देखा और कहा,

"मीट का सॉसेज."

कोस्त्या ने इस पर नाराज़ होकर पुट्टी को अपनी जेब में छिपा लिया.

फिर वे दोनों एक-साथ सिनेमा देखने चले गए. शूरिक पूरे रास्ते पुट्टी को लेकर चिंतित था.

"पुट्टी का क्या हुआ?" वो लगातार पूछता रहा.

आख़िरकार कोस्त्या ने उससे कहा,

"पुट्टी मेरी जेब में है. तुमने सोचा कि मैंने उसे खा लिया होगा, क्यों?"

उन्होंने सिनेमा के टिकट खरीदे और शो देखते समय अपने लिए खाने के लिए दो पेपरमिंट बार भी खरीदे.
अचानक घंटी बजी और कोस्त्या दो सीटों पर कब्ज़ा करने के लिए दौड़ा. इस बीच शूरिक भीड़ में फंस गया.

कोस्त्या को दो अच्छी सीटें मिलीं. एक पर वो खुद बैठ गया और दूसरी उसने पुट्टी रखकर 'बुक' कर ली.
अचानक एक अजनबी व्यक्ति आया और वो पुट्टी पर बैठ गया.





कोस्त्या ने उससे कहा,

"वह जगह पहले से ही रिजर्व्ड है. वो सीट शूरिक के लिए है."

"कौन है शूरिक? देखो, मैं यहाँ बैठा हूँ," उस आदमी ने कहा.

उसी समय शूरिक दौड़कर आया और वो कोस्त्या के बगलवाली सीट पर बैठ गया.

"पुट्टी कहाँ है?" उसने पूछा.

""श्श्श!" कोस्त्या ने उस आदमी की ओर आँख मारते हुए फुसफुसाया.

वो कौन है?" शूरिक ने पूछा.

"मुझे नहीं पता."

"तुम उससे क्यों डर रहे हो?"

"क्योंकि वो पुट्टी पर बैठा है."

"फिर तुमने उसे पुट्टी क्यों दी?"

"मैंने उसे पुट्टी नहीं दी. वो बस उस पर आकर एकदम बैठ गया."

"फिर तुम उससे अपनी पुट्टी वापिस ले लो."

तभी लाइटें बुझ गईं और फिल्म शुरू हो गई.

"क्षमा करें, महाशय," कोस्त्या ने कहा.

"मुझे मेरी पुट्टी दे दें."

"कौन सी पुट्टी?"

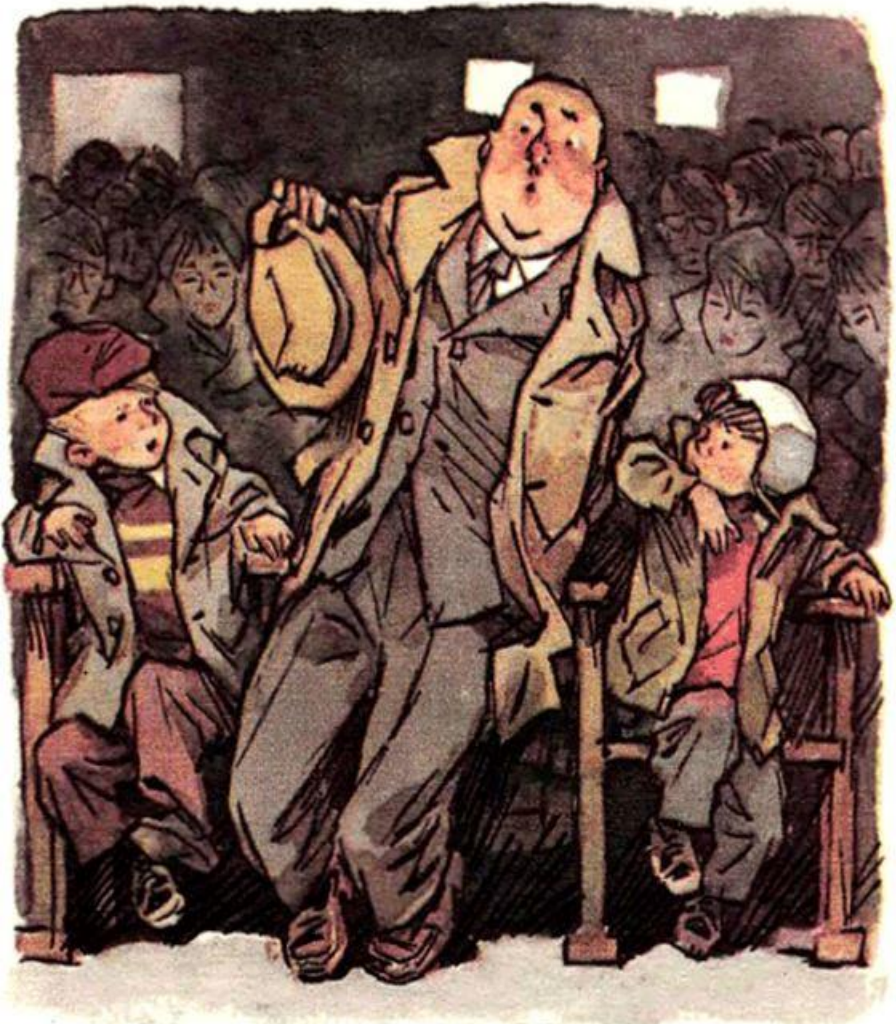
"वो पुट्टी जो हमने खिड़की के फ्रेम से खोदकर निकाली थी."

"तुमने उसे खिड़की के फ्रेम से बाहर खोदा था?"

"बिल्कुल सही. महाशय, कृपा हमें वो वापिस दे दें,."

"लेकिन मैंने तो तुम्हारी पुट्टी नहीं ली."

"हमें पता है कि आपने हमारी पुट्टी नहीं ली. लेकिन आप उस पर बैठे हैं."



"मैं उस पर बैठा हूं?“

“हां."

फिर वो आदमी अपनी सीट से उछल पड़ा.

"तुमने मुझे वो पहले क्यों नहीं बताया, अरे?" वो आदमी चिल्लाया.

"देखिए, मैंने आपसे पहले ही कहा था कि वो सीट रिजर्व्ड है."

"तुमने मुझे वो कब बताया? मेरे सीट पर बैठने के बाद!"

"मुझे क्या पता था आप यहां बैठने वाले हैं?"

फिर अजनबी खड़ा हो गया और अपनी सीट पर इधर-उधर टटोलने लगा.

"अच्छा, वो पुट्टी कहाँ है, मूर्ख लड़के?" वो आदमी अपने दाँतों के बीच फुसफुसाया.

"रुको, पुट्टी वहाँ है!" कोस्त्या चिल्लाया.

"कहाँ?"

"वहाँ, उस पूरी सीट पर. चिंता न करें, हम उसे तुरंत साफ कर देंगे.“

"वही बेहतर होगा! तुम उसे जल्दी साफ़ करो," वो आदमी फुसफुसाया.



"नीचे बैठो!" पीछे से लोगों के चिल्लाने की आवाजें आईं.

"मैं नहीं बैठ सकता," आदमी ने उन्हें समझाया. "मेरी सीट पर पुट्टी चिपकी है."

आख़िरकार लड़कों ने सारी पुट्टी साफ़ कर दी.

"अब सब ठीक है," लड़कों ने कहा,"अब आप बैठ जाएं."

वो आदमी अपनी सीट पर बैठ गया.

और फिर सब कुछ शांत हो गया. कोस्त्या शांति से फिल्म देखना चाहता था, लेकिन अचानक उसने शूरिक को फुसफुसाते हुए सुना.

"क्या तुमने अपना पेपरमिंट बार खाया?"

"अभी नहीं. क्या तुमने खाया?"

"नहीं, मैंने भी नहीं खाया. चलो अब उसे खाते हैं."

"चलो ठीक है."

पेपरमिंट बार खाना शुरू हुआ. कोस्त्या अचानक हड़बड़ाकर खांसने लगा.

"शूरिक, तुम्हारा पेपरमिंट बार कैसा है?"

"बहुत स्वादिष्ट."

"मेरा तो भयानक है. वो एकदम चिपचिपा है.

शायद वो मेरी जेब में पिघल गया होगा."

"पुट्टी कहाँ है?"

"वो यहाँ है, मेरी जेब में... बस एक मिनट रुको! मेरी जेब में पुट्टी नहीं मेरा पेपरमिंट बार है. उह! मैंने अंधेरे में उन्हें अदल-बदल कर दिया. ओह! कोई आश्चर्य नहीं कि उसका स्वाद बहुत अच्छा नहीं था."

फिर गुस्से में, कोस्त्या ने पुट्टी को फर्श पर फेंक दिया.

"तुमने उसे फेंक क्यों दिया?" शूरिक ने पूछा.

"अब मुझे उसकी कोई ज़रुरत नहीं है?"

"हो सकता है तुम्हें उसकी ज़रुरत न हो लेकिन मैं उसे इस्तेमाल कर सकता हूं," शूरिक ने फुसफुसाया और फिर वो पुट्टी की तलाश में सीट के नीचे रेंगने लगा.



"वो कहाँ है?" उसने गुस्से में कहा.

"मैं अंधेरे में उसे कैसे ढूंढ सकता हूँ?"

"ठीक है, मैं उसे ढूंढ निकालूंगा,"

कोस्त्या ने सीटों के नीचे देखने के लिए फर्श पर बैठते हुए कहा.

"आउच!" अचानक नीचे से आवाज आई. "मैं कहता हूं, मिस्टर, उतर जाओ!"

"तुम कौन हो?"

"वो मैं हूं."

"मैं मतलब, कौन?"

"मैं, कोस्त्या. मुझसे दूर हो जाओ."

"लेकिन मैं तुम पर नहीं चढ़ा हूँ."

"हाँ, तुम मेरे हाथ पर चल रहे हो."

"सीट के नीचे रेंगने का तुम्हें सही सबक मिला है."



"मैं तो अपनी पुट्टी ढूंढ रहा था."

कोस्त्या सीट के नीचे रेंगा और अचानक उसने खुद को शूरिक के आमने-सामने पाया.

"वो कौन है?" उसने भयभीत स्वर में कहा.

"वो मैं हूं, शूरिक."

"ठीक है, और यह मैं हूं, कोस्त्या."

"क्या तुम्हें पुट्टी मिली?"

"नहीं, मुझे वो नहीं मिली."

"मुझे भी नहीं."

"अच्छा होगा कि हम फ़िल्म का बाकी भाग देख लें, अन्यथा हम दर्शकों को डरा देंगे; वे सोचेंगे कि कुत्ते उनके पैरों पर अपनी नाक रगड़ रहे हैं."

अंततः कोस्त्या और शूरिक सीटों के नीचे रेंगते हुए बैठ गए - ठीक उसी समय जब स्क्रीन पर END यानि "अंत" शब्द फ्लैश हुआ.

सभी दर्शक निकास द्वार की ओर दौड़े. दोनों लड़के भी लोगों के पीछे-पीछे सड़क पर आए.

"हम किस तरह की फिल्म देख रहे थे?" कोस्त्या ने पूछा. "मुझे उस फिल्म का सिर-पैर तक पल्ले नहीं पड़ा."

"क्या तुम्हें लगता कि मैं फिल्म को समझ पाया, क्यों?" शूरिक ने उत्तर दिया. "कितनी बकवास फिल्म थी. उन्हें ऐसी फिल्में नहीं दिखानी चाहिए!"